CONCORD COMMUNICATIONS

The Resource Centre

Publication : Rajasthan Patrika
Date : Thursday, August 12, 2010
Edition : Ahmedabad
Page : 03

सुहाग को जिगर का टुकड़ा

जीवंत लीवर प्रत्यारोपण सफल

क्र.सं. @ अहमदाबाद

छह माह पूर्व पति का लीवर खराब होने पर एक महिला ने अपने लीवर(जिगर) का टुकड़ा दान कर पति को नया जीवनदान दिया है।

घाटलोडिया क्षेत्र निवासी जिज्ञा (46) ने पति सुनील (47) के खराब लीवर को बदलने के लिए अपना जीवंत लीवर दान करने की सहमति दी। यहां अपोलो हॉस्पिटल में 16 जुलाई को शल्यक्रिया करके सुनील का खराब लीवर निकालाकर जिज्ञा का 6 0 प्रतिशत जीवंत लीवर काटकर पति के शरीर में प्रत्यारोपित किया गया।

अपोलो हॉस्पिटल के चीफ लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. चिराग देसाई ने बुधवार को यहां संवाददाता सम्मेलन में बताया कि सुनील का लीवर खराब होने के कारण अधिक समय तक जीवित रहने की संभावना नहीं थी, इस बारे में उसे स्पष्ट जानकारी व लीवर प्रत्यारोपण की सलाह दी गई। जीवंत लीवर दान करने की पत्नी ने सहमति दी तब रक्त समूह का मिलान किया गया और दंपती के रक्त समूह आपस में मिलने पर आवश्यक जांचें करवाने व रिपोर्ट आने पर दाता के लीवर की स्थिति का पता लगाकर जीवंत लीवर काटकर प्रत्यारोपण किया गया।

अपोलो हॉस्पिटल में बुधवार को संवाददाता सम्मेलन के दौरान महेक पटेल, डॉ. श्रवण बोहरा, डॉ.चिराग देसाई, डॉ. लक्ष्मण खीरिया, सुनील पटेल, जिज्ञा पटेल, हॉस्पिटल के उपाध्यक्ष इंद्रवर्धन मोदी, डॉ. प्रफुल बी.पवार, डॉ. स्वाति उपाध्याय, डॉ. विपुल वोरा। पत्रिका

उन्होंने दिल्ली स्थित अपोलो हॉस्पिटल के चीफ लीवर ट्रांसप्लाटिशन कंसल्टेंट डॉ. सुभाष गुप्ता के निर्देशन में वहां के दो अन्य ट्रांसप्लांट सर्जनों के साथ ही स्थानीय अपोलो हॉस्पिटल के लीवर ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. लक्ष्मण खीरिया, डॉ. स्वाति उपाध्याय, लीवर रोग विशेषज्ञ व लीवर ट्रांसप्लांट मेडीसन डॉ. श्रवण बोहरा, डॉ.विपुल वोरा की टीम ने इंसेंटिव केयर विशेषज्ञ डॉ.जय कोठारी व 3 सदस्यों के अलावा पैरामेडिकल टीम के 6 0 सदस्यों के सहयोग से 16 घंटे में शल्य क्रिया पूरी की।

डॉ. देसाई ने बताया कि एक ऑपरेशन थियेटर में जिज्ञा की 9 घंटे चली शल्यक्रिया में उसका 6 0 प्रतिशत जीवंत लीवर काटकर बाहर निकाला गया। इसके साथ ही दूसरे थियेटर में 16 घंटे चली शल्यक्रिया में सुनील का खराब लीवर निकालकर पत्नी का जीवंत लीवर प्रत्यारोपित किया। इसके 10 दिन बाद दोनों को हॉस्पिटल से छुट्टी दे दी गई। प्रत्योपण के 20 दिन बाद सुनील के साथ ही दाता भी सामान्य जीवन जीने के साथ ही कुछ नियंत्रणों के साथ सामान्य भोजन शुरू कर चुके हैं।

उन्होंने बताया कि दोनों को एक वर्ष तक नियमित रूप से रक्त जांच व अन्य सामान्य जांचें करवाने के साथ ही धूल, भीड़भाड़ वाले स्थान से दूर रहने की जरुरत है, इसके बाद कम से कम 20 वर्ष तक सुनील भी सामान्य जीवन जीने में सक्षम होगा। हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. प्रफुल पवार ने बताया कि राज्य सरकार की अनुमति से गुजरात में पहला जीवंत लीवर प्रत्योपण करने के बाद अब रक्त समूह मिलने पर इस हॉस्पिटल में जीवंत लीवर प्रत्योपण किए जा सकेंगे।